ई-कंटेंट

प्रस्तुतकर्ता- डॉ दीपिका दूबे

सर्टिफिकेट कोर्स (सेमेस्टर 1)

विषय- हिन्दी

कोर्स कोड- A010101T

पाठ्यक्रम का नाम- हिन्दी काव्य

शीर्षक- सिद्ध साहित्य

परिचय

आदिकाल में बौद्ध धर्म की 'वज्रयान' शाखा से सिद्ध साहित्य का उदय हुआ। 8वीं से 13वीं शताब्दी के बीच तंत्र-मंत्र, साधना और लोकभाषा (अपभ्रंश/पुरानी हिंदी) के माध्यम से लिखे गए इस साहित्य का मुख्य उद्देश्य जनसामान्य तक अपनी बात पहुँचाना था। सिद्धों की कुल संख्या **84** मानी गई है, जिनमें सरहपा को हिंदी का प्रथम कवि स्वीकार किया जाता है।

सिद्ध परंपरा का उदय

8वीं शताब्दी (लगभग 769 ई.)

बौद्ध धर्म की महायान शाखा से वज्रयान और सहजयान का विकास हुआ। सरहपा ने तंत्र साधना और लोकभाषा (पुरानी हिंदी) का प्रयोग कर सिद्ध साहित्य की नींव रखी। लुइपा, शबरपा, डोम्भिपा और कण्हपा जैसे महान सिद्धों का आगमन हुआ। इस दौर में 'दोहाकोश' और 'चर्यापद' शैली के माध्यम से दर्शन और काव्य का सुंदर समन्वय हुआ।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

सिद्ध साहित्य का उदय उस समय हुआ जब भारतीय समाज राजनीतिक रूप से विकेंद्रीकृत था और धार्मिक रूप से भारी उथल-पुथल से गुजर रहा था। बौद्ध धर्म अपने मूल स्वरूप से हटकर तांत्रिक साधनाओं और जादू-टोने की ओर झुक रहा था।

सिद्धों ने समाज के निचले और शोषित वर्ग (जैसे डोम, चमार, धोबी, चांडाल आदि) को साधना का अधिकार दिया। उन्होंने समाज में व्याप्त वर्ण-व्यवस्था, जाति-पांति और ब्राह्मणवादी वर्चस्व को सीधी चुनौती दी।

दर्शन

सिद्धों का दर्शन मूलतः **सहजयान** पर आधारित है। इनकी साधना का अंतिम लक्ष्य 'महासुख' (महासुखवाद) की प्राप्ति है।

- **महासुख (मोक्ष):** सिद्धों के अनुसार, जब साधक का चित्त शून्य में विलीन हो जाता है, तब परम आनंद या 'महासुख' की स्थिति उत्पन्न होती है। यह स्थिति इंद्रिय-सुख से परे, आत्मा और परमात्मा के मिलन जैसी होती है।
- **नाड़ी साधना:** सिद्ध साधना में शरीर के भीतर स्थित इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना नाड़ियों का विशेष स्थान है। सांसों के नियंत्रण और हठयोग के माध्यम से कुंडलिनी जागरण पर बल दिया गया।
- **प्रज्ञा और उपाय:** प्रज्ञा (ज्ञान) और उपाय (साधना) के योग से ही मुक्ति संभव मानी गई

भाषा, शैली एवं काव्य रूप

सिद्धों ने अपने विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए जनभाषा को चुना, जिससे पुरानी हिंदी (अपभ्रंश का उत्तर रूप) का विकास हुआ।

- **संध्या भाषा (संधा भाषा):** सिद्धों की भाषा में एक विशेष प्रकार का रहस्यवाद था। इसे 'संध्या भाषा' इसलिए कहा गया क्योंकि इसका अर्थ शाम के धुंधलके की तरह आंशिक रूप से स्पष्ट होता था। बाह्य रूप से देखने पर जो पंक्ति साधारण लगती थी, उसका आध्यात्मिक या तांत्रिक अर्थ अत्यंत गूढ़ होता था।
- **काव्य रूप (रूपक एवं छंद):**
    - **दोहा (दोहाकोश):** उपदेशात्मकता और बाह्याचारों के खंडन के लिए दोहा छंद का प्रयोग किया गया।
    - **चर्यापद:** साधना के गूढ़ अनुभूतियों और गीतों को प्रकट करने के लिए राग-रागिनियों पर आधारित 'चर्यापद' लिखे गए।
- **उलटबासियाँ:** सिद्धों ने प्रतीकात्मक भाषा में उलटबासियों का प्रयोग शुरू किया ।

सिद्ध साहित्य की मुख्य विशेषताएँ

- **संधा भाषा (संध्या भाषा) का प्रयोग:** इनकी भाषा में प्रतीकात्मकता और रहस्यवाद था। बाह्य रूप से कुछ और, जबकि आंतरिक अर्थ आध्यात्मिक होता था।
- **गुरु की महिमा:** गुरु को ईश्वर से भी उच्च स्थान दिया गया, क्योंकि वही साधना का सही मार्ग दिखाता है।
- **ब्राह्मणवाद एवं बाह्याचारों का विरोध:** वेद-पाठ, जाति-पांति, मूर्तिपूजा और आडंबरों का कड़ा खंडन किया गया।
- **सहज साधना पर बल:** हठयोग, तंत्र-मंत्र और नाड़ियों (इड़ा, पिंगला, सुषुम्ना) के माध्यम से 'महासुख' (मोक्ष) की प्राप्ति का विधान।
- **शृंगार और शांत रस की प्रधानता:** साधना में नारी-साहचर्य के कारण शृंगार और अंततः वैराग्य के कारण शांत रस का समावेश हुआ।

साहित्यिक एवं ऐतिहासिक महत्व

- हिंदी भाषा का विकास: सिद्ध साहित्य अपभ्रंश से पुरानी हिंदी (अवहट्ट) के संक्रमण काल की कड़ी है।
- कबीर और संत काव्य की पृष्ठभूमि: कबीरदास और निर्गुण संतों की 'उलटबासियों', 'गुरु-महिमा' और 'आडंबर-विरोध' की नींव सिद्धों ने ही रखी थी।
- मुक्तक एवं गीत शैली: दोहा, चौपाई और गेय पदों (चर्यापद) का शुरुआती रूप यहीं देखने को मिलता है।

संदर्भ-सूची:

- **शुक्ल, रामचंद्र -** *हिंदी साहित्य का इतिहास*
- **द्विवेदी, हजारीप्रसाद -** *हिंदी साहित्य का आदिकाल*
- **सांकृत्यायन, राहुल -***हिंदी काव्य धारा*
- **वर्मा, डॉ. रामकुमार -***हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास*
- **नागरी प्रचारिणी सभा-** *हिंदी साहित्य का बृहत् इतिहास*